

---

# Shri Vishnu Bhujangaprayata Stotra

श्रीविष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Shri Vishnu Bhujangaprayata Stotra

File name : vishnubhujanga.itx

Category : vishhnu, bhujanga, shankarAchArya, vishnu

Location : doc\_vishhnu

Author : Adi Shankaracharya

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Translated by : -

Description-comments : Hymn of 8 verses in praise of the Vishnu

Latest update : August 24, 2002, May 15, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 15, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Vishnu Bhujangaprayata Stotra

---

## श्रीविष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्

---



चिदंशं विभुं निर्मलं निर्विकल्पं  
निरीळं निराकारमोङ्कारगम्यम् ।  
गुणातीतमव्यक्तमेकं तुरीयं  
परं ब्रह्म यं वेद तस्मै नमस्ते ॥ १ ॥

विशुद्धं शिवं शान्तमाधन्तशून्यं  
जगज्जुवनं जयोतिरानन्दरूपम् ।  
अदिग्देशकालव्यवस्थेदनीयं  
त्रयी वक्ति यं वेद तस्मै नमस्ते ॥ २ ॥

महायोगपीठे परिभ्राजमाने  
धरण्यादितत्त्वात्मके शक्तियुक्ते ।  
गुणाढस्करे वह्निभिम्भार्धमध्ये  
समासीनमोङ्कुरिङ्किडष्टाक्षराब्जे ॥ ३ ॥

समानोदितानेकसूर्येन्दुकोटि-  
प्रभापूरतुल्यद्युतिं दुर्निरीक्षम् ।  
न शीतं न योषणं सुवर्णावदात-  
प्रसन्नं सदानन्दसंवित्स्वरूपम् ॥ ४ ॥

सुनासापुटं सुन्दरभ्रूललाटे  
किरीटोचिताकुञ्चितस्निग्धकेशम् ।  
स्फुरत्पुण्डरीकाभिरामायताक्षं  
समुत्सुल्लरत्नप्रसूनावतंसम् ॥ ५ ॥

लसत्सुण्डलामृष्टगाण्डस्थलान्तं  
जपारागयोरधरं यारुडासम् ।  
अलिव्याकुलामोविमन्दारमालं  
महोरस्फुरत्कौस्तुभोदारुडारम् ॥ ६ ॥

सुरत्नाङ्गद्वैरन्वितं बाहुदण्डै-

श्चतुर्भिश्चलत्कङ्कणालंकृताग्रैः ।

उदारोदरालंकृतं पीतवस्त्रं

पदद्वन्द्वनिर्धूतपद्माभिरामम् ॥ ७ ॥

स्वभक्त्येषु सन्दर्शिताकारमेवं

सदा भावयन्संनिरुद्धेन्द्रियाश्रुः ।

दुरापं नरो याति संसारपारं

परस्मै परेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते ॥ ८ ॥

श्रिया शातकुम्भद्युतिस्निग्धकान्त्या

धरण्या य दूर्वादलश्यामलाङ्ग्या ।

कलत्रद्रयेनामुना तोषिताय

त्रिलोकीगृहस्थाय विष्णो नमस्ते ॥ ९ ॥

शरीरं कलत्रं सुतं बन्धुवर्गं

वयस्यं धनं सप्त भृत्यं भुवं च ।

समस्तं परित्यज्य ङा कष्टमेको

गमिष्यामि दुःखेन दूरं डिवाडम् ॥ १० ॥

जरेयं पिशाचीव ङा ज्वतो मे

वसामङ्गिते रक्तं य मांसं बलं च ।

अङ्गो देव सीदामि दीनानुकम्पि-

न्दिमद्यापि ङन्त त्वयोदासितव्यम् ॥ ११ ॥

कङ्क्यालतोषणोल्बलाश्रासवेग-

व्यथाविस्फुरत्सर्वमर्मास्थिबन्धाम् ।

विश्विन्त्यालमन्त्यामसाङ्ग्यामवस्थां

बिभेमि प्रभो किं करोमि प्रसीद ॥ १२ ॥

लपन्नय्युतानन्त गोविन्द विष्णो

मुशारे उरे नाथ नारायणेति ।

यथानुस्मरिष्यामि भक्त्या भवन्तं

तथा मे दयाशील देव प्रसीद ॥ १३ ॥

भुजङ्गप्रयातं पठेद्यस्तु भक्त्या

समाधाय चित्ते भवन्तं मुरारे ।

स मोहं विहायाशु युष्मत्प्रसादा-

त्समाश्रित्य योगं व्रजत्यय्युतं त्वाम् ॥ १४ ॥

एति श्रीमत्परमहंसपरिप्राजडाचार्यस्य


श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ


श्रीविष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Encoded by Sunder Hattangadi

---

——  
*Shri Vishnu Bhujangaprayata Stotra*

pdf was typeset on May 15, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

